IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, November 2023

पतंजलि योगसूत्र में वर्णित योगतत्वो की समीक्षा

प्रकाश[1] and देवेन्द्र कुमार[2]
सहायक प्राध्यापक, योग विज्ञान, फिजियोथेरेपी विभाग
गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार[1]
सहायक प्राध्यापक, योग विज्ञान
म्हाराजा अग्रसेन हिमालयन गढवाल विश्वविद्यालय, उत्तराखण्ड[2]

शोध सारांश : योग कीर्ति को प्रत्येक जन मानस तक पहुँचाने व मानव को महामानव बनाने वाली प्रक्रिया योग विद्या का रहस्य जितना गूढ माना जाता है। उसके कहीं अधिक योग विद्या के प्रणेता महर्षि पतंजलि का जीवन चरित्र है। योग के क्षेत्र में महर्षि का जीवन चरित्र वस्तुतः जो जन सामान्य के सामने हैं, परंतु आज भी उनके जीवन के ऐसे अनसुलझे पहलू हैं। जिनसे मानव मात्र अनभिज्ञ है। उनका सम्पूर्ण जीवन रहस्य से अभीभूत माना जाता है। उनका सम्पूर्ण जीवन योग के प्रति समर्पित था। अपने जीवन काल में उन्होंने बहुत से उत्कृष्ट कार्य किए परंतु योग क्षेत्र में उनका योगदान अत्यंत सराहनीय रहा। योग के क्षेत्र में उनके योगदान का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि उनके द्वारा रचित योग सूत्र वर्तमान काल में भी योग का एक अद्वितीय ग्रंथ माना जाता है। जिसका साक्षी आज भी कोई ग्रंथ नहीं है।

मुख्य शब्द : महर्षि पतंजलि, योग, समाधि पाद, साधन पाद, विभूति पाद, कैवल्य पाद।

संदर्भ ग्रन्थ :

[1] पातञजलयोग प्रदीप, श्री स्वामी ओमिानन्द तीर्थ, गीता प्रेम गोरखपुर, ISBN-81-293-0011-7
[2] मुक्ति के चार सोपान, स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, योग पब्लिकेशन बिहार ISBN - 978-81-85-787-92-3
[3] पतन्जलियोग सूत्र, हरिकृष्णदास गोयन्दका, गीता प्रेस गोरखपुर
[4] योगदर्शनम् आचार्य उदयवीर शास्त्री, गोविन्दराम हंसानन्द प्रकाशन संस्करण– 2015
[5] पतन्जलियोग दर्शन, स्वामी हरिहरानन्द, मोती लाल बनारसी दास, ISBN- 978-81-205-2255-9
[6] योगदर्शनम्, आचार्य उदयवीर शास्त्री, गोविन्दराम हंसानन्द संस्करण 2015
[7] महर्षि पातञजलयोग दर्शन, गीता प्रेस गोरखपुर, श्री हरिकृष्णदास गोयन्दका
[8] योगदर्शनम् आचार्य उदयवीर शास्त्री, गोविन्दराम हसानन्द संस्करण 2015
[9] श्रीमदभगवत,गीतातत्वविवेचनी टीका, जयदयालगोयन्दका, गीता प्रेस गोरखपुर 2016, तेरहवा पुनर्मुद्रण, ISBN- 81-293-0204-7
[10] योग तत्वाह कल्याण, गीता प्रेस गोरखपुर, राधेश्या रवैय , संख्या 1–मुद्रण 1